कला मन्दिर ग्वालियर वार्षिक प्रतिवेदन

(अप्रेल ७४ से मार्च ७५ तक)

कलामन्दिर—१९५४ में स्थापित मार्च ७५ में अपने जीवन के २१ वर्ष समाप्त कर २२ वें वर्ष में प्रविष्ट हो चुका है। प्रारम्भ से ही संस्था रंगकर्म में पूर्ण सक्रियता एवं गंभीरता से संलग्न रही है। जिस उत्साह, उमंग एवं भावी आकांक्षाओं को संजोकर संस्था के सदस्य आगे बढ़े थे उसी सक्रिय वातावरण में निसंदेह यह वर्ष (१९७४-७५) संस्था के लिये गौरवशाली उपलब्धियों का वर्ष रहा है। निश्चय ही इन उपलब्धियों के पीछे इसके आयोजकों व कलाकारों की निष्ठापूर्ण निरंतर सेवा व साधना रही है।

प्राच्य इतिहास :

संस्था का पावन उद्देश्य रहा है- सांस्कृतिक विकास : और इससे सम्बन्धित गतिविधियां, नाटक मंचन, नाट्य नृत्य एवं संगीत समारोह, वैचारिक गोष्ठी आदि प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जाती रही हैं। अल्प समय में ही १९६१ तक आते-आते संस्था ने अखिल भारतीय स्तर पर नृत्य, नाटक एवं संगीत (शास्त्रीय एवं सुगम) समारोह और प्रतियोगिताओं के आयोजन पर अखिल भारतीय स्तर प्राप्त कर लिया था। उस समय के चीन के बर्बर आक्रमण की पृष्ठ भूमि में रेल मंत्रालय द्वारा रेल भाड़े में रियायत बन्द किये जाने से आर्थिक दबाव के कारण अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं का आयोजन सम्भव न हो सका किन्तु इसके बावजूद भी प्रगति की ओर बढ़े हुए कदम रुके नहीं।

एक विहंगम दृष्टि :

विगत वर्षों का इतिहास संस्था के स्वयं के कर्मठ कलाकारों एवं सहकर्मियों की उपलब्धियों का इतिहास है। इस अवधि में अनेक एकांकी एवं पूर्ण नाटक तैयार दिये गये जिनके १२० से अधिक प्रदर्शन हो चुके हैं। प्रस्तुत नाटकों में है लक्ष्मी पूजा, नया सबेरा, नई रोशनी, तात्या-टोपे, शोहदा रक्त चन्दन, नव ज्योति फिल्म की नई हीरोइन, फिल्म शूटिंग, पागल, अभी दिल्ली दूर है, गहराइयां, रोटी और बेटी, जड़ाऊ कंगन, चिराग़ जल उठा, किसका हाथ, वतन की आबरू, शहीदों की-बस्ती, रास्ते मोड़ और पगडंडी, अल्गोजा, त्रिशंकु और मिलिये और पहचानिये। लेखक थे- सर्व श्री विष्णु प्रभाकर, कृष्ण किशोर श्रीवास्तव सतीश डे, रुद्रदत्त मिश्र, ज्ञान देव अग्नीहोत्री, रमेश मेहता, प्रेम कश्यप सोज़, बृजमोहन शाह। इन नाटकों के निर्देशक रहे हैं सर्व श्री प्रेम कश्यप सोज, गोकुल किशोर भटनागर, भैया साहब भागवत, रमेश उपाध्याय, प्रभात गांगुली, जी. पुण्डे, श्याम सुन्दर शर्मा, दया शंकर मिश्रा, बृजमोहन शाह।

जनवरी १९७४ से भोपाल में म०प्र० कला परिषद् द्वारा आयोजित प्रथम प्रादेशिक नाट्य समारोह में अखिल भारतीय स्तर के नाट्य निर्देशक श्री बृजमोहन शाह द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक त्रिशंकु प्रस्तुत किया गया। इस प्रस्तुति को श्रेष्ठ निर्देशित कृति घोषित कर श्री शाह को १००० रु० की राशि से पुरुष्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त

अभिनय के लिये व्यक्तिगत पुरस्कार- थियेटर वाला के अभिनय के लिये श्री रमेश उपाध्याय तथा युवती के अभिनय के लिये श्रीमती विजय लक्ष्मी भूता (कश्यप) को प्रशंसा पुरस्कार प्रदान किये गये। अब तक इस नाटक के १३ प्रदर्शन हो चुके हैं।

नाटकों के प्रस्तुतीकरण के अतिरिक्त अखिल भारतीय स्तर पर नृत्य, शास्त्रीय व सिने संगीत तथा नाटक के अनेक कार्यक्रम आयोजित किये हैं। इस क्रम में स्वर्गीय श्रद्धेय पं० ओंकारनाथ ठाकुर, उस्ताद विलायत खां, पद्भूषण उस्ताद बिसमिल्लाह खां, श्री कुमार गांधर्व, श्री अमजद अली, इमरत खां, श्रीमती एम० राजन, श्री शिव कुमार शर्मा, बृजभूषण लाल कावरा, श्री उमाशंकर मिश्र, श्री सामता प्रसाद, पं० चतुरलाल, स्वर्गीय श्रीमती गीतादत्त, श्री मन्नाडे, श्री महेन्द्र कपूर, श्री तलत महमूद, मीनू पुरुषोत्तम, नृत्यांगना रोशन कुमारी नृत्यांगना, उमा शर्मा, राजस्थान कला केन्द्र, लिटिल बेले (ट्रुप) कत्थक केन्द्र, त्रिवेणी कला संगम, दिशांतर, लिटिल थियेटर ग्रुप, बीनस, मनोरंजन क्लब, श्री आर्ट्स क्लब, फ़ाइन आर्ट सेंटर, सर्वश्री सोहराब मोदी, स्व. बलराज साहनी, श्रीमती मेहताब मोदी, श्रीमती कामिनी कौशल, किशोर शाहू, सज्जन आदि।

किशोर कुमार नाइट का आयोजन विशालता की दृष्टि से इस अवधि का सर्वाधिक लोकप्रिय एवं विशाल आयोजन कहा जा सकता है। प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्रद्धेय श्यामाचरण शुक्ल द्वारा उद्घाटित इस आयोजन में उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पद्मिनी शुक्ल, कृषि मंत्री श्री भागवत साबू तथा सूचना मंत्री श्री बाल कवि बैरागी भी थे। इसके प्रमुख कलाकार थे श्री किशोर कुमार एवं सुश्री सुलक्षणा पंडित और साथ में थे श्री दिनेश हिंगू एवं उनकी आरकेस्टा पार्टी उद-घोषक थे श्री अमीन सयानी।

संस्था को प्रारम्भिक स्वरूप प्रदान करने तथा अखिल भारतीय स्तर तक लाने में संस्थापक सदस्यों- सर्व श्री घनराज सूदन, सूर्यकांत वर्मा, स्व० श्री सी०एस० विश्वमित्र जी का योगदान सदा स्मरणीय है।

एक स्वर्णिम वर्ष १९७४-७५

रंग-शिविर :

इस स्वर्णिम वर्ष की गतिविधियों का पावन प्रारम्भ रग शिविर का आयोजन से हुआ। म०प्र० कला परिषद् के तत्वाधान में ५ जून से ६ जुलाई ७४ तक नाट्य मंदिर समागम में ३१ दिवसीय रंग शिविर का संचालन विख्यात निर्देशिक एवं रंगकर्मी श्री बृजमोहन शाह ने किया। इस शिविर हेतु परिषद् द्वारा ७५०० रू० की राशि उपलब्ध कराई गई। शिविर में आर्टिस्ट कम्बाइन के १५ तथा कला मंदिर के ३५ रंग-कर्मियों ने भाग लिया।

शिविर का उद्देश्य—प्रशिक्षणार्थीयों में समकालीन रंग चेतना, रंग संवेदना एवं रंग सौन्दर्य बोध का विकास करना और उन्हें अधुनातन रंग प्रयोगों तथा नाट्य रूपायन की विधि से अवगत कराना था।

प्रशिक्षणार्थीयों को सैद्धान्तिक व रचनात्मक ज्ञानवर्धन के हेतु रंग जगत के निम्न पारंगत रंग-विशेषज्ञों के व्याख्यान आयोजित किये गये- श्री व्ही० राममूर्ति- रंगाकन और प्रकाश व्यवस्था, श्री राजिन्द्र पाल पाश्यचात्य नाट्य आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में, श्री नरेन्द्र शर्मा—नृत्य मुद्रा गति भाग समूहनों का नाटक में उपयोग, डा० विजय बापट आज के हिन्दी रंग मंच का विकास अधुनातन रूप।

प्रशिक्षणार्थीयों को नाट्य प्रस्तुति के प्राय: सभी सैद्धान्तिक व स्ना-त्मक पक्षों से विशद परिचय कराने के लिये नाट्य संकल्पना द्वारा प्रस्तुति पर विशेष बल दिया गया सौन्दर्य बोध, संकल्पना, विचार व चिंतन को उकसाने और विकसित करने के दृष्टिकोण से उन्हें नाट्य प्रस्तुति की हर शाखा पर स्वतन्त्र रूप से काम करने का पूरा - पूरा अवसर दिया गया।

३० दिवसीय शिविरावधि में देश के इस दशक का एक महान नाटक तुग़लक़ और अन्य महत्वपूर्ण नाटक 'हयवदन' तैयार कराकर मंचित किये गये। 'तुग़लक़' जैसे विशालतम एवं अति व्यय वाले नाटक के मंचन का श्रेय कला मन्दिर के कर्मठ कलाकारों तथा सहयोगियों को है। देश के अन्य भागों में ३-३ महीने के पूर्वाभ्यास तथा ४०-५० हजार रू० की लागत से तैयार किये गये इस नाटक की तुलना में २५ दिवस की अवधि तथा ६००० रु० की लागत से इस नाटक को प्रस्तुत करना संस्था के लिये वास्तव में गौरव की बात है। इस नाटक के प्रस्तुति व्यवस्थापक संस्था के चेयर मेन श्री प्रेमचन्द कश्यप स्वयं थे और मंच व्यवस्था थी श्री के.सी. वर्मा (सचिव) के हाथ में। अन्य प्रशिक्षणार्थी एवं कलाकार थे सर्व श्री विश्वमित्र वास्वाणी, रमेश उपाध्याय, राविन डेविड, आनन्द गुप्ता, देवेन्द्र जैन, वीरेन्द्र पचोरी, वीरेन्द्र शर्मा, मधु शिरालकर, विजय दलवी, दीपक श्रीवास्तव, आनन्द विरमानी, रामबाबू कटारे,

पूरनचन्द शंखवाय, केशव श्रीवास्तव, स्वदेश षदादा, राजीव विरमानी, नन्दलाल दयानी, मोहन बलवानी, अशोक अग्रवाल, अशोक आर्य, यशपाल वास्वाणी, हरिशंकर कुशवाह, राजेन्द्रसिंह बुन्देला, कृष्ण गोपाल दीक्षित, अशोक कुमार शर्मा, आदि ।

३ व ४ जुलाई ७४ को तुग़लक़ के दो प्रदर्शन आयोजित किये गये। प्रथम प्रदर्शन कला परिषद् के लिये तथा द्वितीय संस्था के स्वयं के लिये किया गया ।

तुगलक का वाह्य प्रदर्शन :

दिनांक १६ व १७ अगस्त ७४ को मध्य प्रदेश कला परिषद् के के निमंत्रण पर परिषद के ही तत्वाधान में रवीन्द्र नाट्य गृह–भोपाल में तुग़लक़ नाटक के दो प्रदर्शन आयोजित किये गये । प्रस्तुति की दृष्टि से सफल होने पर भी आर्थिक दृष्टि से ये प्रदर्शन हानिप्रद रहे ।

नाटक—कांचन-रंग :

बंगला नाटककार श्री शम्भु मित्र द्वारा लिखित तथा श्री नैमिचन्द्र द्वारा अनुदित नाटक कांचन-रंग का मंचन संस्था की इस वर्ष की दूसरी महत्वपूर्ण प्रस्तुति थी । इसका निर्देशन संस्था के रंगकर्मी सदस्य श्री देवेन्द्र जैन ने किया । इस नाटक का प्रथम प्रदर्शन ५ दिसम्बर ७४ को नाट्य मंदिर में आयोजित किया गया जिसमें ग्वालियर जेसीज का विशेष सहयोग सराहनीय रहा ।

नाटक 'सुनो जनमेजय' :

इस वर्ष संस्था ने एक और महत्वपूर्ण नाटक 'सुनो जनमेजय' प्रस्तुत किया । इस बहुचर्चित नाटक के लेखक थे- श्री आद्य रंगाचार्य तथा अनुवाद किया गया है श्री ब० वकारन्त एवं श्री नैमीचन्द्र जैन द्वारा । नाटक का निर्देशन श्री बृजमोहन शाह ने किया ।

१८ वां अ० भा० सांस्कृतिक समारोह :

नगर के सांस्कृतिक एवं कला जगत को आंदोलित करते रहने के उद्देश्य से परम्परागत १८ वें अ० भा० सांस्कृतिक समारोह का आयोजन ३१ दिसम्बर ७४ से २जनवरी ७५ तक ग्वालियर मेला रंगमंच पर किया गया । यह समारोह नाट्य प्रधान रहा, कहा जा सकता है । प्रथम दिवस ३१ दिसम्बर ७४ को नाटक कांचन- रंग की पुनरावृत्ति की गई । पुन: ग्वालियर के रंग प्रेमियों ने इसे सराहा ।

द्वितीय दिवस– १ जनवरी ७५ को 'नाटक सुनो जनमेजय' प्रस्तुत किया गया । 'सुनो जनमेजय' समाज की बिसंगतियों का लेखा-जोखा है , नाटक 'एब्सर्ड' शैली में लिखा गया है और उसी में मंचित भी किया गया ।

तृतीय दिवस– २ जनवरी ७५ को दिल्ली की देश विख्यात नृत्य संस्था 'इण्डियन रिवावल ग्रुप' द्वारा श्री योग सुन्दर के नेतृत्व में विभिन्न भारतीय लोक नृत्यों के प्रदर्शन किये गये । मध्य प्रदेश चेम्बर ऑफ कामर्स के उद्योग एवं व्यापार सम्मेलन में भाग लेने के लिये आये हुए प्रतिनिधि विशेष रूप से इस अवसर पर आमंत्रित किये गये थे ।

द्वितीय प्रादेशिक नाट्य समारोह :

म०प्र० कला परिषद् भोपाल द्वारा द्वितीय म०प्र० नाट्य समारोह का आयोजन इन्दौर में ५ से १२ जरवरी १९७५ तक आयोजित किया गया । इस समारोह में १० जनबरी को संस्था की ओर से 'सुनो जनमेजय' प्रस्तुत किया गया ।

मोहन राकेश स्मृति नाट्य समारोह :

रायपुर की सांस्कृतिक एवं साहित्य संस्था 'वर्तमान' द्वारा ८ से १२ जनवरी ७५ तक राथपुर में भारत के प्रसिद्ध नाट्यकार स्वर्गीय मोहन राकेश की स्मृति मे नाट्य समारोह आयोजित किया गया । इस समारोह में १२ जनवरी को कलामंदिर ने नाटक 'कांचन रंग' प्रस्तुत कर यहां के नाट्य प्रेमियों का मन जीत लिया ।

एक महत्वपूर्ण उपलब्धि—अ० भा० नाट्य समारोह :

देश की राजधानी दिल्ली से बाहर प्रथम अखिल भारतीय वहुभाषी नाट्य समारोह के लिये मध्य प्रदेश की राजजानी भोपाल को चुनकर अष्ट दिवसीय नाट्य समारोह का आयोजन किया गया । इस समारोह मे बंगला, मलयालम, मराठी एवं हिन्दी के श्रेष्ठ नाट्य दलों को आमंत्रित किया गया था । म० प्र० के दो नगरों–भोपाल और ग्वालियर के नाट्य दलों को भी सम्मिलित किया गया । कला मंदिर के लिये यह गौरवपूर्ण अवसर था कि उसे अपने नाट्य कृति प्रस्तुत करने को चुना गया । संस्था ने अपने श्रेष्ठतम नाटक त्रिशकु का मंचन किया । श्री बृजमोहन शाह द्वारा लिखित एवं निर्देशित 'त्रिशंकु' को भोपाल में प्रस्तुत करने का यह दूसरा अवसर था । एक बार पुन: भोपाल के परिपक्व प्रेक्षकों ने इसे सराहा । इस प्रस्तुति को Trishanku—A Sound of Music की संज्ञा दी गई ।

"रंगमंच" का प्रकाशन :

परम्परागत प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका 'रंगमंच' का प्रकाशन दो अंको में किया गया। प्रथम अंक जनवरी तथा दूसरा मार्च में व यह प्रकाशन देश व प्रदेश में सांस्कृतिक जगत की अनेक उपलब्धियों तथा मंचन की नवीन गतिविधियों की जानकारी देने के साथ-साथ संस्था के लिये आय का प्रमुख साधन बन गया है। इसमें प्रकाशित विज्ञापनों के माध्यम से ५००० रु० से अधिक की शुद्ध बचत हुई है।

नवीन परम्पराओं का सूत्रपात—नये युग का प्रारम्भ :

वर्षों तक यह संस्था वाह्य कलाकारों एवं कला दलों को आमंत्रित कर उनके कलात्मक तथा मनोरंजनात्मक प्रदर्शनों को आयोजित करती रही। विगत दो वर्षों से संस्था की दृष्टि में भारी परिवर्तन हुआ है और संस्था ने अपने स्वयं के नाट्य प्रदर्शनों पर तुलनात्मक अधिक बल देना प्रारम्भ किया है। जहां संस्था वर्ष में एक नाटक ही मंचस्थ कर पाती थी, वहां अब एक वर्षावधि में तीन-तीन नये नाटकों का मंचन एवं उसके कई प्रदर्शन होने लगे हैं। यह वास्तव में एक नये युग का सूत्रपात है। और नई परम्पराओं का प्रारम्भ भी।

आर्थिक पक्ष :

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष गत दो वर्षों की तुलना में अधिक अच्छा रहा। संगीत नाटक अकादमी से प्राप्त ३०००) रु० तथा म०प्र० कला परिषद् द्वारा प्रदत्त १०००) रु० का विधुत उपकरण क्रय हेतु अनुदान तथा विज्ञापनों से प्राप्त आय ने रंग शिविर और तुग़लक़ नाटक के घाटे की पूर्ति करने में बड़ा योगदान दिया है। कुल मिलाकर यह वर्ष घाटे के बजाय कुछ बचत को ही देकर समाप्त हुआ। गत वर्षों की तुलना में इस वर्ष आय तथा व्यय पक्ष में पर्याप्त पूर्ति हुई है। जो निर्विवाद रूप से किसी शौकिया संस्था (Amature Institution) के लिये बड़े गौरव की बात है। इस वर्ष कुल प्राप्ति रु० ३४,३६०.८१ एवं कुल व्यय २९,३८०.१३ हुआ है। लगभग ४०००) की नई सम्पतियाँ, मंचन सामग्री, वेषभूषा, नाट्य साहित्य का क्रय किया गया है।

साभार :

ग्वालियर कलात्मक नगरी है। यहां के वातावरण में कला की मादक खुशबू भरी है। और इसलिये इस नगरी के महानुभावों का आर्शीवाद और प्रेरणा के साथ ही हमें सक्रिय सदस्यों का सहयोग भी प्राप्त है और सुरुचिपूर्ण दर्शकों का प्यार भी। इसी सामूहिक प्यार भरे सहयोग ने हमें निरन्तर नयी आस्था, नया उत्साह प्रदान किया है, जिसके आधार पर प्रत्येक वर्ष नये आयोजन कर नगर एवं प्रदेश के सांस्कृतिक विकास में निर्बाध सहयोग दिया है।

अन्त में संस्था की ओर से सभी संरक्षको, दानदाताओं विशेषकर नगर पालिक निगम, मेला कमेटी, जे० सी मिल्स, विज्ञापन दाताओं, सक्रिय कार्यकर्ताओं एवं शुभ चिन्तकों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना परम पुनीत कर्तव्य समझता हूँ जिनके समन्वित सहयोग एवं शुभकामनाओं ने संस्था को अखिल भारतीय स्तर प्रदान किया है। ●

पारसकुमार गंगवाल
महासचिव,
कला मंदिर, ग्वालियर

KALA MANDIR, GWALIOR (MADHYA PRADESH)

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON 31ST MARCH 1975

EXPENDITURE

To,	Printing & Stationery		476-50
,,	Typing Expenses		496-10
,,	Postage & Telegrams & Trunkcall		355-05
,,	Refreshment & Tea		246-15
,,	Office Expenses		724-94
,,	Travelling & Conveyance		939:65
,,	Miscellanceous expenses		479-00
,,	Depreciation		1,445-86
,,	Bank Commission		23-50
,,	Renewal Fees		25-30
,,	D. K. Rai Memorial Fund debit balance & transferred from Balance Sheet		21-00
,,	Audit Fees		125-00
,,	Entertainment expenses		100-00
,,	Bad Debts		1,001-50
,,	Salary Expenses		690-00
,,	Interest paid		440-29
,,	Photography expenses		158-00
,,	Light expenses		90-00
,,	Musical Instrument repairs		51-00
(a)	**Programme Expenses :**		
	1. Drama Tughlaq	2,438-05	
	2. Bhopal Tughlaq (Supports not available for exps. of Rs. 193-30).	3,560-55	
	3. Kanchan Rang	913-25	
	4. Kanchan Rang Raipur	115-00	
	5. M. P. State Drama Festival, Indore.	1,405-35	

INCOME

By Grant-in-aid :			
	From Sangeet Natak Academy.	3,000-00	
	Muncipal Corpn., Gwalior	1,000-00	
	Mela Committee	1,600-00	
	J. C. Mills	800-00	
		———	6,400-00
By,	Life Membership fee		250-00
,,	Donation & Help		
,,	Monthly financial help		960-00
,,	Monthly subscription		1,530-00
,,	Advertisement		11,220-00
,,	Equipment hire receipt		526-00
,,	Sale of programme tickets		2,916-00
,,	Interest		587-77
By,	**Programme Receipts :**		
	1. Bhopal Tughlaq	2,630-00	
	2. Rang Shivir	500-00	
	3. Kanchan Rang	865-00	
	4. Kanchan Rang Raipur	1,500-00	
	5. National Theatre Festival.	1,572-80	
	6. Tughlaq Rang Shivir	1,501-24	
	7. State Drama Festival Indore.	1,402-00	
		———	9,971-04
		Total :	34,360-81

LIABILITIES	ASSETS		
Total b/d 43,107-91	**Dresses and Costumes :**		
	As per last Balance Sheet	643-86	
	Addition	1,528-60	
		2,172-46	
	Less : Depreciation	217-24	
			1,955-22
	Property (Steel Almirah and Iron Box) :		
	As per last Balance Sheet	273-87	
	Addition Iron Box	105-00	
		378-87	
	Less : Depreciation	37-88	
			340-99
	Electric Fan :		
	Purchased during the year	320-00	
	Less : Depreciation	32-00	
			288-00
	Stage and Setting Materials :		
	As per last Balance Sheet	1,245-87	
	Addition	1,483-30	
		2,729-17	
	Less : Depreciation	272-91	
			2,456-26
	Current Assets, Loans and Advances :		
	Current Assets :		
	Sundry Debtors (Unsecured Considered good).	13,674-82	
	Cash-at-Bank :		
	With the Central Bank of India, Gwalior in Saving Account.	34-89	